Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

डॉक्टर राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में निरूपित धर्म

Manoj Kumar*

Research Scholar, Department of Hindi, NIILM University, Kaithal, Haryana

सार - ***धर्मिक चेतना का मुख्य कार्य समाज के सामने धर्म का वास्तविक स्वरूप प्रस्तुत करता है। जिससे धर्म का सही अर्थ जान सकें। हिंदी साहित्य में कई साहित्यकारों ने साहित्य के माध्यम से समाज सुधार का पवित्र कार्य किया। राही मासूम रज़ा भी इस प्रकार के धार्मिक प्रभाव से अछूते नहीं थे, इसलिए 'राही' की धार्मिक भावना धर्मनिरपेक्ष है। उनके उपन्यासों के सभी चरित्र धार्मिक चेतना से भरे हैं।***

----------X----------

1. धर्म का अर्थ:-

धर्म शब्द 'धृ' धातु से निर्मित है, जिसका अर्थ है- धारण करना या धारण शक्ति। अतः किसी भी वस्तु की धारणा शक्ति को धर्म कहा जाता है। हिंदी शब्दकोश में "धर्म को ईश्वरीय श्रद्धा, पूजा पाठ तथा लौकिक व सामाजिक कर्तव्य से जोड़ा गया है।"1

भारतीय समाज में धर्म का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। आदिकाल से ही धर्म मानव के जीवन का निर्धारण करता आ रहा है। जीवन के रहन-सहन, संस्कृति आदि में जीवन का अहम रोल है। धर्म के साथ तीन अर्थ मुख्य रूप से जुड़ें हैं, जो सम्पूर्ण जीवन को संभाल कर रखे वह 'धर्म' है। दूसरा पहलू है उसका सहज होना। धर्म आरोपित नही होता, वह बाहर से थोपा नहीं जाता, अपितु वह अपने भीतर से होता है। उसे अपने में ही डूबकर देखा जा सकता है। धर्म अवधारणा का तीसरा पहलू है, उसकी गतिशीलता।

2. धर्म की परिभाषा:-

धर्म की कोई सटीक परिभाषा देना सम्भव नहीं है क्योंकि इसक¨ व्यापक स्तर पर देखा जा सकता है। फिर भी विद्वानों ने इसे अपने-अपने ढंग से परिभाषित करने का प्रयास किया है।

डॉ॰ राधाकृष्णन के अनुसार, "धर्म वह अनुशासन है, जो अंतरात्मा जो स्पष्ट करता है, बुराई और कुत्सितता से संघर्ष करने में सहायता देता है। काम, क्रोध और लोभ से हमारी रक्षा करता है। नैतिक बल को उन्मुक्त करता है, संसार को बचाने का महान कार्य करने का साहस प्रदान करता है।"3

पाश्चात्य विद्वानों ने भी अपने-अपने मतानुसार धर्म की परिभाषा देने का प्रयास किया है। इसमें अर्नाल्ड ग्रीन- धर्म को विश्वास और अति प्राकृतिक शक्तियाँ से जोड़ते हैं। जॉन क्यूलर कहतें है कि- "धर्म के अंतर्गत पवित्र एवं माननीय विश्वासों, सांवेगिक भावनाओं आदि का व्यापक क्रियान्वयन होता है।4

3. डॉ. राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में धार्मिक चेतना:-

धर्मिक चेतना का मुख्य कार्य समाज के सामने धर्म का वास्तविक स्वरूप प्रस्तुत करता है। जिससे धर्म का सही अर्थ जान सकें। हिंदी साहित्य में कई साहित्यकारों ने साहित्य के माध्यम से समाज सुधार का पवित्र कार्य किया। राही मासूम रज़ा भी इस प्रकार के धार्मिक प्रभाव से अछूते नहीं थे, इसलिए 'राही' की धार्मिक भावना धर्मनिरपेक्ष है। उनके उपन्यासों के सभी चरित्र धार्मिक चेतना से भरे हैं।

राही धार्मिक व्यक्ति थे। धर्म के प्रति उनकी श्रद्धा थी। ईश्वर और अल्लाह क¨ एक ही मानते थे। उन्होंने कभी भी अपने उपन्यासों के पात्रों में धार्मिक आधार पर भेदभाव नहीं किया। उनके उपन्यास के पात्र समाज के हर वर्ग से सम्बन्ध रखते हैं। उन्होंने अपने उपन्यासों में धर्म को विभिन्न पात्रों के द्वारा अभिजीत किया, उन्होंने धर्म को हिंदू-मुसलमान या इसाई के रूप में कभी नहीं देखा। यहाँ पर राही की धार्मिक चेतना क¨ उनके उपन्यासों के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया जा रहा है।

www.ignited.in

3.1 अंधविश्वास:-

राही के उपन्यास 'टोपी शुक्ला' में छुआछूत जैसी अंधश्रद्धा दिखाई पड़ती है। इमरान की परदादी हिंदुओं का छुआ भी नहीं खाती, क्योंकि वह हिंदुओं को अछूत मानती है। वह अपने बेटे की बीमारी को देखकर चिन्तित हो जाती है। जब उसके बेटे को चेचक निकलती है तो वह चारपाई के पास एक टांग पर खड़ी हो जाती है और माता से उसके ठीक होने की दुआएँ मांगती है। 'माता' मारे बच्चे को माफ कर दियो।"5

लेखक के 'आधा गाँव' उपन्यास में भी जातिगत भेदभाव का चित्रण मिलता है। जिसमें मुस्लिम परिवारों में शीया लोग अपनी रक्त शुद्धता पर अधिक ध्यान देते हैं। शादी ब्याह, नाते, रिश्ते आदि में हड्डी की शुद्धता को विशेष प्रधानता दी जाती है। उदाहरण- "सुलेमान मियां मजहबी आदमी थे, इसलिए वह झंगटियाबो की छुई हुई कोई गीली चीज इस्तेमाल नहीं कर सकते थे।"6

'नीम का पेड़' उपन्यास में भी लेखक ने अंधविश्वास का वर्णन किया है। दुखिया एक पुरातन विचारों वाली नारी है। जो अंधविश्वास में डूबी हुई है। अपनी बहु शारदा की जचगी घर पर ही होगी, क्योंकि अस्पताल पर उसका भरोसा नहीं है- "उसकी दलील थी कि सुखीराम की पैदाइश भी तो घर में ही हुई थी और वह इतना बड़ा आदमी बना। लेकिन शारदा को अपनी सास कि इस जाहिलाना दलील पर गुस्सा आ रहा था। दुखिया कह रही थी कि अस्पताल का क्या भरोसा, वहाँ तो बच्चे बदल दिए जाते हैं।"7

3.2 धार्मिक आडम्बरों का चित्रण:-

आजकल धर्म के नाम पर अनेक आडम्बर एवं दिखावे हो रहे हैं। डॉ. राही मासूम रज़ा ने अपने उपन्यासों में धर्म के नाम पर हो रहे आडम्बरों के विरुद्ध आवाज उठाई है। वे धर्म में विश्वास करते थे, लेकिन बाह्य आडम्बरों से नफरत करते थे। उनके अनेक उपन्यासों में आडम्बरों का चित्रण किया गया है, जैसे- आधा गाँव, औस की बूंद, असंतोष के दिन, दिल एक सादा कागज, कटरा बी आरज़ू, हिम्मत जॉनपुरी इत्यादि।

'दिल एक सादा कागज' उपन्यास में सैदानी बी एक ऐसी औरत है, जो लोगों को बरगलाती हुई जहन्नुम की बातें करके लोगों में अफवाह फैलाती है कि वे खुदा से बातें करती है। खुदा उनके सपने में आते हैं। सैदानी बी अपने पति का ख्याल नहीं रख सकती और सैदानी बी की इस तरह की हरकतों से तंग आकर मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। प्रसंग देखें- "इस बीवी ने जीते जी अपने खाविन्द की खिदमत की और इसलिए मरने के बाद जहन्नुम की आग में जल रही है और बीवी ने अपने मियां के ऐबों पर पर्दा डाला तो जन्नत से सात हूरे इसकी खिदमत पर मुकर्रर करदी गई है।"8

3.3 मनोतियाँ:-

पुराने समय से ही धर्म मनुष्य के लिए श्रद्धा का विषय रहा है। धर्म में विश्वास रखने वाले लोगों में देवी, देवताओं एवं ईश्वरीय आस्था के प्रति एक प्रकार का आंतरिक उत्सव है- मनोतियाँ। जिसकी पूर्ति के लिए इच्छित की असमर्थना करतें है। अपनी किसी भी अधूरी इच्छा के लिए मनोतियाँ मानना भारतीय समाज की विशेष परम्परा रही है। 'आधा गाँव' उपन्यास में विभिन्न प्रसंगों पर मन्नतें मांगने की प्रथा का वर्णन किया गया है, उपन्यास के एक पात्र फुनन्न मियां को जेल की सजा हो जाती है, जब उनकी रिहाई के लिए उनकी पत्नी कुलसुम मन्नत माँगती है। उदाहरण देखें- "उसने तो बड़े ताजिये के चौक पर मन्नत मांग डाली थी, लेकिन जब फुनन्न मियां की सजा हो गई तो इससे उसके विश्वास को ठेस नहीं लगी। उसने सोचा शायद मौला इम्तिहान ले रहे हैं या शायद दमडिया बी ने ठीक से मन्नत ही न माँगी हो या फुनन्न शाह और चंदन शहीद उस वक्त अपनी कब्रों में रहे ही न हो और बाद में रहमत के फरिश्ते उन्हें यह बताना भूल गए हों कि दमडिया मर के जरिए गंगोली की कुलसुम-बी नें कोई मन्नत मांगी है।"9

3.4 भूत-प्रेत सम्बन्धी अंधविश्वास:-

समाज प्रशिक्षित एवं अशिक्षित सभी लोग भूत-प्रेत, आत्मा-चुड़ैल जैसे अंधविश्वास के शिकार होते रहते हैं। राही मासूम रज़ा ने अपने उपन्यासों में इन परिस्थितियों का वर्णन किया है।

'सीन-75' उपन्यास की कथावस्तु भी अंधविश्वास की कहानी पर आधारित है। उपन्यास पात्रा 'सरला' जो कॉलेज के हॉस्टल में रहती है। उस हॉस्टल में दो ब्लॉक थे। एक न्यू ब्लॉक, एक ओल्ड ब्लॉक, जिसमें दोनों ब्लॉकों के बीच में इमली का पेड़ था। इससे इस बात चर्चा होती है कि इमली के पेड़ पर भूत रहता है। "न्यू ब्लॉक और ओल्ड ब्लॉक के बीच में इमली का एक पुराना पेड़ भी था, जिसके बारे में हॉस्टल में कहानियाँ मशहूर थी कि उस पर कोई जिन्न या भूत रहता है, जो लड़कियों को परेशान करता है।"10 ग्रामीण जनता अपनी अनपढ़ता के कारण इन बातों पर विश्वास करती है, लेकिन लेखक ने इनका खंडन किया है।

www.ignited.in

3.5 हिंदू मुस्लिम आपसी सम्बन्ध:-

आजादी के बाद भारत और पाकिस्तान बने। लोगों की नजरों में भारत हिंदू और पाकिस्तान मुसलमानों का था। इसलिए हिंदू और मुसलमानों के संबंधों पर भी इस बात का प्रभाव पड़ा। राही ने इसी प्रकार की समस्याओं को देखा और अनुभव किया। उनके उपन्यास 'असंतोष के दिन' में भी यही समस्या दर्शाई गई है। उपन्यास की पात्रा अब्बास की पत्नी सैयदा हिंदुओं से नफरत करती है, किंतु उनके घर का नौकर राममोहन के प्रति सैयदा के मन में लगाव रहता है। राममोहन हिंदू है, फिर भी सैयदा राममोहन से बात करती हुई कहती है कि, "और सुन! कल अपनी बीवी और बच्चे को कफ्र्यू उठते ही उस झोपड़पट्टी से यहाँ उठा ला! क्या पता वहाँ कब क्या हो जाए।''

धर्मनिरपेक्षता:-

भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही सर्व धर्म समभाव की भावना रही है। समाज में लोग आपस में मिलजुल कर रहते आए हैं। राही मासूम रज़ा ने भी अपने उपन्यासों में धर्मनिरपेक्षता का बहुत ही अच्छी तरह वर्णन किया है। 'टोपी शुक्ला' उपन्यास भी खुद ऐसी ही कथावस्तु को अपने में समेटे हुए हैं। इसमें टोपी द्वारा ट्रेन में मुसाफिर करते समय ट्रेन के डब्बे में एक पंडित जी से मुलाकात हो जाती है। यात्रा के समय टोपी जब हिंदू मुस्लिम की बातें करता है, तब पंडित जी इन भेदभाव का खंडन करते हैं और हिंदू मुस्लिम एकता का समर्थन करते हैं। पंडित जी कहते हैं कि, "हिंदू-मुसलमान का भेदभाव झूठा है बेटा! पंडित जी ने कहा! वह तो भगवान की लीला है।'' पंडित जी की बातों से धर्मनिरपेक्षता का संदेश मिलता है।

निष्कर्ष:-

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि डॉ. राही मासूम रज़ा के उपन्यासों में निरूपित धर्म, मानव धर्म है, जिसमें आपस में मिलजुल कर रहने का संदेश व्याप्त है।

संदर्भ ग्रंथ

1. डॉ॰ हरदेव बाहरी, हिंदी शब्दक॰श, पृष्ठ 416
2. डॉ॰ राधाकृष्णन, धर्म और समाज, पृष्ठ 45
3. डॉ॰ वी॰ पी॰ चौहान, रामदरश मिश्र के कथा साहित्य में ग्राम्य जीवन, पृष्ठ 291
4. डॉ॰ राही मासूम रज़ा, टोपी शुक्ला, पृष्ठ 25
5. डॉ॰ राही मासूम रज़ा, आधा गाँव, पृष्ठ 42
6. डॉ॰ राही मासूम रज़ा, नीम का पेड़, पृष्ठ 81
7. डॉ॰ राही मासूम रज़ा, दिल एक सादा कागज, पृष्ठ 11-12
8. डॉ॰ राही मासूम रज़ा, आधा गाँव, पृष्ठ 90
9. डॉ॰ राही मासूम रज़ा, सीन-75, पृष्ठ 29-30
10. डॉ॰ राही मासूम रज़ा, असंतोष के दिन, पृष्ठ 18

Corresponding Author

Manoj Kumar*

Research Scholar, Department of Hindi, NIILM University, Kaithal, Haryana

mannlohchab@yahoo.co.in